International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 6 Issue 8, August-2017, Impact Factor: 3.578

गिरिराज किशोर की कहानियों के संदर्भ में – मानवीय अस्मिता

अजीत पाल
म.न. एम–12, इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी,
सोनीपत रोड़, रोहतक

सार

साहित्य जगत के आग्रही गिरिराज किशोर का कथ्य और शिल्प बेजोड़ है। नाट्य साहित्य में जहाँ वो अभिनव संवाद योजना, भाव व्यंजना तथा नाटकीयता का विशिष्ट प्रयोग करते हुए, मंचीय दृष्टि से सफल नाटक व एकांकियो की रचना की है। और उपन्यास जगत में भी इतने ही सिद्धहस्त रहे हैं – इसका सशक्त उदाहरण है 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास जो हिन्दी साहित्य जगत में मील का पत्थर है। इस उपन्यास का कथ्य व शिल्प अपने आप में बेजोड़ है। कहानीकार के रूप में साहित्य रागन में उज्जवल नक्षत्र की भाँति शोभित गिरिराज की पहचान स्पष्टवादी बव्ताजी है। यही कारण है कि अपने पात्रों के चरित्र विकास को लेकर पूर्ण संयत और संतुष्ट है। गिरिराज स्वयं कहते है, ''रचनाकार का मानस मूलतः ऐसी मिट्टी है जिसमें अनुभव के बीच पड़कर रचना के रूप में प्रस्फुटित होते है। और मानवीय अस्मिता को जानने–समझने और नवीन परिदृश्य में देखने के लिए प्रेरित करते है।

Keywords: *अस्मिता, मानव, दलित, शोषक, किसान, स्त्री, अन्याय, न्याय के साधन इत्यादि।*

भूमिका

गिरिराज किशोर का कथा साहित्य मानव की अस्मिता के विविध आयामों का अंकन करते हुए आदर्श और प्रासंगिक जीवनमूल्यों की खोज करते हैं। उनके कथा साहित्य के विविध चरित्र और उनका अर्न्तद्वन्द्व मानव की टूटती–बिखरती अस्मिता को रेखाकित करती है। कथाकार ने सम्यक् दृष्टि जीवन की उन विद्रपत्ताओं की ओर जाती है। जो आदर को आदमी होने के अधिकार से वंचित करती है। यही कारण है कि गिरिराज किशोर की कहानियों का फलक आम आदमी से लेकर सम्यक् के चक्रव्युह में उलझे उन सभी जीवों को अभिव्यक्ति देता है जो मनुष्य होकर भी मनुष्य का जीवन नहीं जी पा रहे हैं। अपने आस–पास क परिवेश में जो कुछ भी देखा, सोचा या समझा जाए उसे शब्दगत कर देना ही साहित्य है और यही भविष्य की देन है जिस माध्यम से ही पीढ़ियाँ ज्ञान अर्जित व सृजित करती है। क्योंकि सबके प्राकटय से पहले की घटनाओं को ज्ञात करने का एकमात्र साधन है।

साहित्य ही है। गुलाबराय के अनुसार, ''साहित्य संसार के प्रतिमानसिक प्रतिक्रिया अर्थात् विचारों, भावों और संकल्पों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है और हमारे किसी न किसी प्रकार के हित साधन के कारण संरक्षणीय हो जाता है।[1] साहित्यकार अपने देशकाल से प्रभावित होता है, अतः तत्कालीन समय का प्रतिबिम्ब साहित्य में मिलता है। साहित्य जीवन की रागात्मक अभिव्यक्ति है और यही साहित्य समाज को विकासोन्मुख बनाकर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' का आदर्श प्राप्त करता है। जिस तरह मानव शरीर को समुचित विकास के लिए शुद्ध भोजन की आवश्यकता होती है, ठीक उसी तरह मानव–मस्तिष्क के विकास के लिए सत्साहित्य आवश्यक है।

इसी प्रकार अस्मिता व्यक्ति विशेष में निहित एक ऐसी मापक इकाई है जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र या विश्व को गतिशील करने का कार्य करती है। यह विकासशील और स्वतंत्र जागृति है जो व्यक्ति के क्रियाकलापों, व्यवहारों तथा अभिवृत्तियों का नियमन करती हैं। ''अतः चेतना किसी भी व्यक्ति की ज्ञानावस्था या बुद्धितत्व है। जो उसे जीवन के सही मार्ग की ओर दिग्दर्शित करती रहती है।''[2] उनकी कहानियों के संदर्भ में भी अस्मिता को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया गया है– दलित अस्मिता, स्त्री अस्मिता, किसान–मजदूर विषयक अस्मिता। दलित अस्मिता समय बहुत बलवान होता है ये बात समय–समय पर बुद्धिजीवियों के द्वारा सत्यापित की जाती रही है। बुद्धिजीवी से अभिप्रायः मात्र उच्च शिक्षित बौद्धिक वर्ग से नहीं है अपितु उस प्रत्येक जीव से है जिसमें सोचने, समझने व तर्क करने की शक्ति विद्यमान है। चाहे वह किसी भी वर्ग से संबंधित हो।

उसके उपरांत भी समाज के कुछ विशिष्ट वर्ग ने षड्यंत्र करके सभी मनुष्यों को वर्ण के आधार पर विभक्त कर दिया जिसमें अन्तिम व चतुर्थ वर्ण है – शुद्र, जिसको उत्पत्ति कर्म के आधार पर की गई किन्तु समय के साथ इसे वंशानुगतं बनाकर उन्हें निम्न से निम्नतम श्रेणी तक पहुँचा दिया गया। भारतीय दलित वर्ग के लोगों ने इस्लाम, क्रिश्चयन और बौद्ध धर्म का भी दामन थामा पर परिणाम कुछ सकारात्मक नहीं रहे। नाम काम और दर्शन तो परिवर्तित हुआ पर आर्थिक और सामाजिक स्तर में कोई परिवर्तन नहीं आया। राष्ट्रवादी सोचक के साथ आजादी की लड़ाई शुरू की गई जिसमें जनभागीदारी बढ़ाने के लिए निम्न वर्ग के लोगों को भी अपने साथ लेकर चलने की मुहिम शुरू हुई। इसी दौर में बाबा भीमराव जैसे कुछ व्यक्तित्व आगे आए और सामूहिक प्रयासों के द्वारा दलितों में नयी चेतना का विकास हुआ।

गिरिराज किशोर ने स्वयं इसे स्वीकार करते हुए कहा, ''सच पूछिए तो जातियाँ, जनजातियाँ अनुसूचित नहीं होती है, मानसिकता होती है मानना, समझना दोनों।''[3] भारतीय समाज में हजारों वर्षों से चली आयी अमानवीय अछूत परम्परा या दलितों की स्थिति सबसे ज्यादा शोचनीय, पीड़ादायक एवं त्रासदी रही है। क्योंकि उनकी इस दयनीय स्थिति को पुनर्जन्मवाद और भाग्यवाद के अंधविश्वासों और अपौरुषेय तर्कों से जोड़ दिया गया था। डॉ॰ अम्बेडकर व गाँधीजी के संयुक्त प्रयासों से इस व्यवस्था में कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ इन्हें शिक्षा संस्थानों में प्रवेश नौकरी व पदोन्नति के अवसर मिल गए। संसद व विधान सभा में इनके लिए स्थान सुरक्षित कर दिया गया। किन्तु इनके कुछ समयवाद अलग प्रकार की जटिलताएं व समस्याएँ उत्पन्न हो गइ। इसके विशिष्ट वर्ग को आघात पहुँचा और नये प्रकार की घृष्णा व क्रोध की अभिव्यक्ति देखने को मिली। आर्थिक रूप से कमजोर व दुर्बल सवर्णों ने भी आरक्षण की मांग प्रांरभ कर दी क्योंकि केवल दलित को यह अधिकार दिया जाना उनके प्रति अन्याय की अभिव्यक्ति थी। किन्तु यह बात उत्तमी सार्थक तत्कालीन समय में भी सिद्ध नहीं हो पाई है।

गिरिराज किशोर जी कहानी 'रंजन के जूते' का कथानक दलित अस्मिता को नये दृष्टिकोण में व्यक्त करता है। कहानी नवीं कक्षा में पढ़ने वाले दो लड़के रमेश व रंजन के आपसी प्रेम व साहचर्य पर केन्द्रित ह। रंजन संयन्न परिवार का लड़का है जबकि रमेश गरीब व श्रमिक परिवार का जो मिट्टी का पारम्परिक व्यवसाय चलाता है। रंजन रमेश की गरीबी से व्यक्ति था उसके फटे जूते देखकर वह बहुत दुखी होता उसने मम्मी से कहा– ''मम्मी रमेश के जूते फट गये हैं। इस तरह के जूते पहनकर उसका स्कूल आना मुझे अच्छा नहीं लगता।''
''वह अपने बाप से क्यों नहीं कहता?''

''वो गरीब है। जूता खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं।''
'तो न पढ़ाए'

यहाँ रंजन अपनी मम्मी की बात का प्रतिकार करता है कि केवल पैसे वाले ही बयुं पढ़ सकते है और यह बात रमेश पर भारी पड़ती है और वह लोगों के द्वारा अपेक्षा व हंसी का पात्र बनता है। जिसकी प्रति क्रियास्वरूप वह अवसादग्रस्त हो जाती है। उसके मन में विचित्र प्रतिक्रियाएं होने लगती है। वह घर जाने से भी डर जाता है कि कहीं पिताजी की मार ना पड़े। क्योंकि बाबू कहते हैं, ''आदमी ना जूठन कभी मत समेटो। खाओ तो सच्च खाओ और सच वो जो अपना कमाया हो।

रंजन के जूते कहानी दलित अस्मिता को नये परिप्रेक्ष्य में शब्द देती है। अभावग्रस्त निम्न जाति के लोगों को उच्च जातिद्वारा मिला समान भी दुःखद होता है।

'बाले–बाले' कहानी में ऑफीसर्स कॉलोनी के सर्वेन्ट क्वाटर्स में रहने वाले परिवारों का चित्रण है कि वे किस प्रकार चौका–बर्तन करके अपना गुजारा करती है जिसकी भाटिका अूमृता है जिसने 3 बच्चे है – 2 बेटे और 1 बेटी जिनके भरण–पोषण के लिए उसे यह काम करना पड़ता है। अमृता का चिंतन है, ''बंग्ले का दबदबा ही आर होता है कम से कम बच्चे तो बरी सोहब्त से बचे रहते है।''[4]

एक अन्य कहानी 'परिशिष्ट' में भी दलित समुदाय के IIT छात्र को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। जिसका नाम राम उजागर है। जिसके चारों और घटनाएँ क्रमबद्ध रूप से घूमती है। दलित होने के कारण उसे तिरस्कृत होना पड़ता है। उसमें विरोध करने की भी ताकत है। परंतु मानसिक स्तर पर, वह उनसे अलग हो जाता है। इसी कारण जब एक सवण छात्र मोहम फाँसी लगाकर आत्महत्याकर लेता है और उसके शव को कोई नीचे नहीं उतारता को राम उजागर उतारता है लेकिन अपने मन से नहीं उतार पाता।

स्त्री अस्मिता

समकालीन रचनाधर्मिता में नारी स्वातन्शय और नारी विमर्श को भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित ओर व्याख्यायित करने का भरपूर उपक्रम किया गया। नारी को विभिन्न आयामों से देखने परखने के साथ महसूस किया गया कि भारतीय नारी अभी भी विभिन्न मान्यताओं और परंपराओं में जकड़ी हुई है। नारी अस्मिता को नवीन आयाम देने के लिए, अपने मनोभावों, विचारो और मानवीय स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति देने का सार्थक उपक्रम किया। गिरिराज किशोर

की कहानी चिट्ठी, आन्द्रे की प्रेमिका में नारी एक नये आत्मविश्वास के साथ अपनी सामाजिक भूमिका का निर्वहन करने को आतुर दिखती है। आन्द्रे की प्रेमिका दिव्या कहती है– महत्वाकांक्षी कौम होती है। हाँ अपनी तरह से मैं भी महत्वकांक्षी हूँ। हम दोनों ही महत्वाकांक्षाओं की प्रकृति जरूर भिन्न है। इसका कारण तुम्हारा पुरुष होगा और मेरा महिला होना भी हो सकता है।''[5]

'फ्रॉकवाला धोड़ा निकरवाला साईस, गिरिराज किशोर की बहुचर्चित कहानी है। विवाह संस्था या दाम्पत्य जीवन की बदली हुई मूल्य दृष्टि का यथार्थ चित्रण इसमें हुआ है। कहानी की याथिका रीता दाम्पत्य जीवन विषयक स्थापित मूल्यांकन बिना हिचकिचाहट अस्वीकार कर विवाहेतरयौन संबंध रखने से नहीं कतराती। पति को नाचीज समझ अवहेलना करती है। कहानी 'शीर्षकहीन' की नायिका अपनी पति की आत्महीनता के भाव के कारण उससे जुड़ नहीं पाती। क्योंकि वह कॉमफिडेन्स का संस्कार जीवन में पा चुकी है। आर्थिक परिस्थितियों के कारण दाम्पत्य जीवन में उदासी भर गई है। एक दिन पति के अफसर मित्र निवेदन पर आते है दावत के लिए वह उनसे प्रभावित होती है। एक दिन निवेदक घर पहुँचता है तो वह पति के आने तक रूकने के लिए कहती है, ''लेकिन चलने की इजाजत माँगी तो उसके मेरा हाथपकड़ लिया। वह स्थिति मेरे लिए सर्वथा अपरिचित थी।''[6] परिणाम एक और विवाहेतर संबंध के रूप में देखने को मिलता है।

'पगडंडियाँ' कहानी में भी कुछ इसी प्रकार का चित्रण मि॰ सेन और मिसेज जोशी के बीच में देखने को मिलता है और परिणामस्वरूप उन्हीं की संतान नीमा व राजीव कच्ची उम्र में रोमांस करने लगते है। विवाह के बाद संबंधों से उत्पन्न तनाव एवं अपराध ग्रंथि से उत्पन्न कुंठित स्थितियों का अंकन गिरिराज किशोकर की कहानियों में हुआ है। इसी प्रकार, 'और मैं था', संगत, केस, परछाइयाँ इसी संदर्भ के गिर्द घुमती कहानियाँ है। गिरिराज किशोर ने नारी जीवन के विविध अंर्त और पीड़न–उत्पीड़न के शब्द चित्र अपनी कहानियों में गढ़े है। वैश्वीकरण से होने वाला प्रभाव स्पष्ट दिखात है।

श्रमिक अस्मिता

भारतीय समाज का सबसे पीड़ित समुदाय है श्रमिक। हाडतोड़ श्रम करने के बावजूद उसे न तो मनमाफिक भोजन मिल पाता, न ही वस्त्र, इसके लिए कहा जाता है कि 'न रहने को घर न खाने को दाना'। इसके कारण यह समुदाय उच्चवर्ग, पूँजीपतियों और बड़े भूस्वामियों के यहां श्रम करने को विवश है। आर्थिक अभवों के चलते पीढ़ी दर पीढ़ी उसी विसंगति और विवशता को यह समुदाय ढोता चला जाता है। गिरिराज किशोर ने अपने कथा साहित्य में श्रमिक समस्याओं का बड़ी गहराई से आकलन किया है। उसने श्रमिक पात्र ऑफिस कार्यालय में दैनिक वेतन भोगी, सर्वेन्ट क्वाटर के रहनेवाले और दूसरों के घर में झाड़ू–बर्तन करने वाले हैं। कुछ श्रमिक रिक्शा ऑटो चलाने वाले और अन्य छोटे–मोटे धन्धों से जुड़े भी हें। अधिकतर श्रमिक निचली जातियों से तालुक रखते हैं। कुछ खेतिहर मजदूर हैं। अपनी विराट संवदेनशीलता से गिरिराज किशोर ने इस कथानक को अत्यंत मर्मस्पर्शी यथार्थवादी बना दिया है। समाज के उपेक्षित गिरे हुए शूद्र जाति के एक महत्वाकांक्षी पात्र के वर्गीया, आंतरिक जद्दोजहद, विद्रुपताओं और तकलीफों को पत्रावली क माध्यम से अभिव्यक्त किया है। प्रौद्योगिकी या विज्ञान के द्वारा पूँजीवादी शक्तियाँ अपना जाल फैलाने में लगी हैं। गिरिराज के मतानुसार, ''प्रौद्योगिकी तो मात्र व्यावसायिकता है, उपभोक्तावाद है। कभी–कभी लगता है जिन्दगी को बचाने के लिए मौत का मुँह खोला जा रहा है।''[7]

कहानी 'मृत्युलोक कथा' में ग्रामीण संस्कृति और कृषि व्यवस्था का स्वरूप चित्रित हुआ है। जहाँ लोग अपनी धरती से अटूट प्यार करते हैं उसकी काया को नष्ट किए बिना उसके सौन्दर्य से अपनी आवश्यकता पूरी करते हैं।

'देवलोक कथा' में गिरिराज किशोर भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की भीतरी आडम्बरबाजी को रेखांकित करते है। इस कथा में आजाद भारत के सामाजिक पात्रों को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है।

लेखन में महज नाम नहीं लिया है बल्कि इनके चरित्र, कार्यकलाप, भारतीय शासन तंत्र का कच्चा चिट्ठा खोल कर रख दिया है। वे स्पष्ट करते हैं कि पूंजीवाद, साम्राज्यवादी देश की भीत के बूते देवलोक बढ़ाया जा रहा है। और 'मृत्युलोक की व्याथा' का प्रतिनिधित्व करने वालों की आवाज को गलत करार दिया है। ''उपन्यासकार का अभीष्ट लय पूंजीवादी देशों के पंजों में फंसे नवविकसित राष्ट्रों की छटपटाहटों को उजागर करना है जहाँ वह 'मुक्ति' के लिए संघर्षत है।''[8]

'दावेदार' एक प्रकार की रूपक कथा है जिनमें सत्य की खोज का प्रयास किया गया है। एक 'अनाम आदमी' किस प्रकार सबके जीवन में प्रकाश लाता है। वे संवेदनशील इंसानियत की खोज को इसमें प्रस्तुत करना चाहते हैं।

संदर्भ

1. गिरीराज किशोर – भूमिका
2. वही।
3. गिगिराज किशोर भूमिका से, पृष्ठ–7
4. गिगिराज किशोर –बंगले वाले, पृष्ठ 68
5. पेपरखेट– गिरिराज किशोर, पृष्ठ 92
6. रिश्ता व अन्य कहानियाँ – गिरिराज किशोर, पृष्ठ 29
7. बेचारिणी, संपादक मणिका मोहिनी, गिरिराज किशोर के लेख से, पृष्ठ 46
8. दीर्घा संपादक डॉ. विनय (डॉ. जगमोहन चोपड़ा के लेख), पृष्ठ 64